इण्डियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज का 32वां अन्तर्राश्ट्रीय सम्मेलन

'' विकास की अवधारणा में नैतिकता को शामिल करने पर ही हिंसा रूक सकती है ''

- आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 8 अक्टूबर।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में आयोजित इण्डियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज के 32वें अन्तर्राश्ट्रीय सम्मेलन में उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि अब तक देश में जो भी विकास की अवधारणा बनाई गई उनमें आर्थिक व भौतिक विकास को ही आदर्श माना गया। आर्थिक व भौतिक विकास जरूरी है ही लेकिन उसमें अहिंसा, पर्यावरण व नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं होगा तब तक विकास की सारी अवधारणा हिंसा की ओर ही ले जाएगी। विकास की अवधारणा में नैतिकता के विकास को शामिल करने पर ही हिंसा थम सकती है। केवल भाषणों से किसी भी तरह का परिवर्तन होना संभव नहीं है। परिवर्तन के लिए प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। आतंकवादियों की हिंसा की नियमित ट्रेनिंग होती है लेकिन अहिंसा के लिए कोई ट्रेनिंग और उसका नेटवर्क नहीं है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि गांधी के साथ अब तक न्याय नहीं हुआ है। गांधी के विचार को सिर्फ एकांत दृष्टि से देखा गया है। जबकि उसे सापेक्ष दृश्टि से देखा जाना चाहिए। आज गांधी का नाम तो हो रहा है लेकिन गांधी का काम नहीं हो रहा है।

आचार्यप्रवर ने अहिंसा समवाय भवन आयोजित कार्यक्रम में फरमाया कि भगवान महावीर ने कहा है कि कुछ भी करो उसमें काल क्षेत्र, भाव आदि दृष्टियों से उसकी पूर्ण मीमांसा करो। जब तक अहिंसा व अपरिग्रह दोनों को एक साथ नहीं देखा जाएगा तब तक हिंसा सामप्त नहीं होगी।

पूर्व सांसद एवं एफ्रो एशियाई दर्शन परिषद के सचिव प्रो. रामजीसिंह ने कहा कि आज हिंसा के लिए केवल भारम में ही नहीं दुनिया में भी कोई स्थान नहीं हो सकता। उन्होंने महात्मा गांधी की लिखित पुस्तक हिन्द स्वराज को लोगों की चेतना बदलने वाली पुस्तक बताते हुए कहा कि स्वतंत्रता व नागरिकों के मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। भारतीय गांधी अध्ययन समिति के अध्यक्ष प्रो. जयनारायण शर्मा ने विकास की अवधारणा में सापेक्ष अर्थशास्त्र की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किये। अहिंसा एवं शांति विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी.आर. दूगड़ ने अतिथियों एवं सम्मेलन में पहुंचे सम्भागियों का स्वागत किया। इस अन्तर्राश्ट्रीय में जापान, अमेरिका, ईरान और नेपाल सहित देश के विभिन्न भागों से 100 से अधिक सम्भागीगण भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. जे.पी.एन मिश्रा उपस्थित थे।

बैंगानी व दूगड़ परिवार को नवाज अणुव्रत सेवी सम्मान से

लाडनूं, 8 अक्टूबर।

नगर के दो परिवारों को अणुव्रत सेवी परिवार के सम्मान से नवाजा गया। जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में आचार्य महाप्रज्ञ ने हंसराज बैंगानी एवं पूनमचंद दूगड़ के परिवार को अपने उद्बोधन में इस सम्मान से अलंऔत किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि दोनों ही परिवार पिछले 50 वर्शों से मैत्रीपूर्ण व्यवहार के साथ रह रहे हैं। जो अपने आप में स्वस्थ समाज की परिकल्पना में एक आदर्श है। इस अवसर पर श्री हंसराज बैंगानी, जतनदेवी बैंगानी, श्री पूनमचन्द दूगड़ व विमला दूगड़ ने उपस्थित होकर आचार्यप्रवर के दर्शन किये।